3, 71, 438
प्रकाशन संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

गुड्डन जाएगी ससुराल

गुड्डन जाएगी ससुराल मेरी रो-धो के।
एक जनी लहँगा पहनाओ, एक पिन्हाओ चोली
एक जनी चूनरिया डालो, एक सजाओ डोली
गुड्डन जाएगी ससुराल मेरी रो-धो के।
एक जनी तरकारी छौंको, एक निकालो पूरी,
खाते-खाते कट जाएगी सास के घर की दूरी
गुड्डन जाएगी ससुराल मेरी रो-धो के।
देखो-देखो टुन्नी,जिन्नी,पम्मी नहीं मानती
मैं गुड़िया की अम्मां हूँ क्या इतना नहीं जानती
गुड्डन जाएगी ससुराल मेरी रो-धो के।
ललकी मेरी गुलकी-गुलकी दुल्हा जैसे कांटा
हाय भाग में यही लिखा था, मियां मिलेगा नाटा
गुड्डन जाएगी ससुराल मेरी रो-धो के।

फायदा

जो जेब न होती कुरते में
तो पैसे भला कहाँ धरते ?
जो घास न होती धरती पर
तो गदहे,घोड़े क्या चरते?
जो हवा न होती यहीं कहीं
तो गुब्बारों में क्या भरते?
जो सूंड न होती हाथी के
तो हाथी का हम क्या करते?
बे-सूंड न हाथी खा पाता
बे-सूंड न हाथी पी पाता
कहने को हाथी कहलाता
पर बिना हाथ का हो जाता
वह मुंह ललचाता रह जाता
दो दाँत दिखाता रह जाता
फायदा फकत इतना होता
इसको जुकाम न हो पाता।